किस मिट्टी से बनी हो तुम
सहन करती हो, चुप रहती हो
ख़ामूश भँवर में फँसी हो तुम
नरम मुलायम मिट्टी से निकलकर
देखो के सुनामी बनी हो तुम ।

अपनी राहत का सामान मुझको बनाया
पाँव तले मेरी पहचान कुचला
बाँदी बनाया, दिवारों में मुझको चीना
मगर मैं चली दिवारें फांदकर
कल्पना मैं बनी, खलाओं में उडी ।

ये दरद ही ऐसा है
टखनों में उतर जाता है
अलफाज़ मेरे चुप हैं
कागज़ मगर फट जाता है ।

तकलीफ मुझको लोगों ने
कुछ इस तरह से दी
तजुरुबों में आज बमबारी हो गई
दिल में लगी है आगू
कैसे बुझाउँ
जब कुछ न बन पडा
शायर मैं बन गई ।

~ जमीला निशात

यूँ दिल में एक दर्द सा उठा, तन्हाई थी आवाज़ में ,
पर हमें आंखे नम करने का हक नहीं।

लुट जाता है रुतबा हर लम्हा,
पर उनके दामन में छुपने का हक हमारा नहीं।

हर मंजिल पराई, रास्ते हो गए बेगाने,
पर अपनों का साथ हमारा हक नहीं।

जब दुनिया ने रुलाया, तो उसीकी मुहोब्बत ने हराया,
वक्त के हाथों हर ख्वाब भी मुरझाया,
पर हमें उम्मीदों को सजाने का हक नहीं।

इम्तिहान अभी शायद बाकी है,
पर होसलों की उड़ान भरने का हमें हक नहीं।

यूँ साज़िश रचाया साँसों ने,
की वो कफ़न हमारे नाम का अभी बना नहीं।

~ स्मृति पाटिल

This chapbook has been published as an initiative of the Prajnya 16 Days Campaign against Gender Violence 2012. All poems included in this chapbook were submitted by poets in response to a call for poetry announced by Prajnya in October 2012. To find out more about Prajnya, please visit www.prajnya.in

No Violence, No Silence

© 2012

NO VIOLENCE, NO SILENCE

A selection of poetry

(Volume 3)